

DR. SUBROTO DAS

Dr. Das is the CEO of the Vadodara based Lifeline Foundation and a Founding Member of Asian Association for EMS and also the Chair of the South & Central Asian Chapters. Dr. Subroto Das co-founded Lifeline Foundation along with his wife, Sushmita (after surviving a life threatening accident in August, 1999 on one of India's busiest highways), with the aim of reducing the 100,000+ annual highway deaths in India. The only Indian to be honoured with the Asian EMS Lifetime Achievement Award by the Asian EMS Council in 2015, The Times of India calls Dr. Das "the country's best known EMS expert".

2. Born on January 20, 1965, Dr. Das completed his medical schooling from Baroda Medical College, Maharaja Sayajirao University and later pursued Hospital Management and Industrial Health. He also serves as the Managing Editor of the Asian EMS Journal, the official journal of the Asian Association for EMS. He served as the Editorial Chair of EMSINDIA®, India's first peer-reviewed journal on EMS. He is one of the 1st in India to advocate a national universally accessible medical emergency helpline number and legislation for EMS and trauma care.

3. This internationally recognized effort began with the Highway Rescue Project in 2002, the 1st Highway Emergency Medical Services (EMS) across an entire state, popularly called by the Accident Helpline 98250 26000 in Gujarat. Lifeline Foundation has rescued hundreds of injured highway accident victims on 5029 kilometers of National Highways in various states since 2002.

4. As an Eisenhower Fellow, he has been mentored by some of America's greatest EMS experts, an experience that has helped him to guide EMS professionals in the Indian sub-continent. He has been part of various national and international policy making committees on pre-hospital and trauma care. He has worked with various EMS stakeholders in India, Sri Lanka and Bangladesh. Dr. Das, in 2009 authored a book on the struggles and successes of the Sri Lankan EMS systems, titled 'Prepare to Respond'; the book was released by the then President of Sri Lanka.

5. Dr. Das and his Foundation have now shifted towards a more inclusive highway accident relief; the current focus is on actively advocating Bystander First Aid & CPR to enable common citizens to save lives in post-accident trauma and 'out of hospital cardiac arrest'. The aim is to train and empower passer-bys to act and save lives till ambulance relief reaches. His other current priority is to create Pan-Asian Trauma Care systems along with other Asian stakeholders. He is also working with industries, ports and mines to better Industrial EMS across the country.

6. Nationally and internationally felicitated, his work has been documented in 2012 by Films Division of India. Along with his wife, he was honoured with the Red & White Bravery Gold Award for Social Acts of Courage in 2003. As a social entrepreneur, Dr. Das was elected an Ashoka Fellow in 2004. He received the UK based Prince Michael International Road Safety Award in 2004, the CNN TEN & Reliance Industries Real Heroes Award in 2008 and was honoured as "Role Model in EMS" by the Emergency Physicians of India (EPI). In 2008, Dainik Bhaskar Group recognised him as one of the 100 most powerful persons in Gujarat. In 2006, his organisation, Lifeline Foundation was conferred the 4th National Road Safety Award by Ministry of Road Transport & Highways. The Limca Book of Records recognised their efforts in 2005.



डॉ. शुब्रोतो दास

डॉ. शुब्रोतो दास बड़ोदरा के लाइफ लाइन फाउंडेशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं एशियन एसोसिएशन फॉर ईएमएस के संस्थापक सदस्य तथा साउथ एंड सेंट्रल एशियन चेप्टर्स के अध्यक्ष हैं। आपने (भारत के व्यस्तम राजमार्गों में से एक पर अगस्त 1999 में भीषण दुर्घटना में बाल-बाल बचने के बाद) भारत में राजमार्गों पर होने वाली वार्षिक 1,00,000 से भी अधिक मृत्यु की घटनाओं को कम करने के उद्देश्य से अपनी पत्नी सुस्मिता के साथ मिलकर लाइफ फाउंडेशन की स्थापना की। आपको वर्ष 2015 में एशियन ईएमएस काउंसिल द्वारा एशियन ईएमएस लाइफ लाइन अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। द टाइम्स ऑफ इंडिया में आपको 'देश का सर्वाधिक प्रसिद्ध ईएमएस विशेषज्ञ' बताया है।

2. आपका जन्म 20 जनवरी, 1965 को हुआ था। आपने बड़ौदा चिकित्सा कॉलेज, महाराज सियाजीराव विश्वविद्यालय से चिकित्सा की शिक्षा प्राप्त की एवं बाद में आप चिकित्सा प्रबंधन एवं औद्योगिक स्वास्थ्य के पाठयक्रम में उत्तीर्ण हुए। आपने ईएमएस से संबंधित भारत के प्रथम पीयर-रिव्यूड जरनल, EMSINDIA के एडिटोरियल चेयर के रूप में अपनी सेवा दी है। आप एशियन ईएमएस जर्नल, जो ईएमएस के लिए सरकारी जरनल हैं, के प्रबंध संपादक के रूप में भी कार्यरत हैं। आप भारत के उन चुनिंदा व्यक्तियों में से पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने एक राष्ट्रीय सार्वभौमिक सहज चिकित्सकीय आपातकाल सहायता नम्बर एवं ईएमएस ट्रॉमा केयर के लिए विधान बनाने की वकालत की है।

3. अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त यह प्रयास वर्ष 2002 में राजमार्ग बचाव परियोजना से शुरू हुआ, जो संपूर्ण राज्य में प्रथम राजमार्ग आपातकालीन चिकित्सा सेवा (ईएमएस) है एवं गुजरात राज्य में यह एक्सीडेंट हेल्प लाईन 9825026000 के नाम से लोकप्रिय है। लाइफलाइन फाउंडेशन ने वर्ष 2002 से लेकर अब तक, विभिन्न राज्यों में 5029 किलोमीटर लंबे राष्ट्रीय राजमार्ग पर दुर्घटना से पीड़ित तथा घायल सैकड़ों व्यक्तियों के प्राण बचाए हैं।

4. आईजनहावर फैलो के रूप में आपको अमेरिका के महान ईएमएस विशेषज्ञों से विशेषज्ञता प्राप्त हुई है। यह एक ऐसा अनुभव था जिसने भारतीय उपमहा द्वीप में ईएमएस पेशेवरों का मार्गदर्शन करने में आपको बहुत ही सहायता दी है। आप अस्पताल पूर्व एवं ट्रामा केयर के संबंध में नीति नियामक कई अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय समितियों के सदस्य रहे हैं। आप विभिन्न ईएमएस हितधारियों के साथ भारत, श्रीलंका एवं बंगलादेश में कार्य कर चुके हैं। आपने वर्ष 2009 में "प्रिपेयर टू रिसपोंड" शीर्षक से श्रीलंकाई ईएमएस तंत्र के संघर्ष एवं उसकी सफलता पर एक पुस्तक की रचना की जिसका विमोचन श्रीलंका के तत्कालीन राष्ट्रपति के द्वारा किया गया।

5. आप एवं आपके फाउंडेशन ने अब और अधिक समावेषी राजमार्ग दुर्घटना राहत पर ध्यान केन्द्रित किया है तथा वर्तमान में आपने अपना ध्यान दुर्घटना के बाद संकट के समय तथा "आउट ऑफ हास्पिटल कार्डियक अरेस्ट" में लोगों की जान बचाने के लिए सामान्य जनता को बायस्टेंडर फर्स्ट एड एंड सीपीआर के लिये समर्थ बनाने की पुरजोर वकालत करने पर केन्द्रित कर दिया है। इसका उद्देश्य दुर्घटना की स्थिति में एम्बुलेंस के पहुंचने तक सड़क पर चल रहे यात्री को पीड़ितों की रक्षा एवं उनकी जान बचाने के लिए प्रशिक्षण देना तथा उनका सशक्तिकरण करना है। आपकी अन्य वर्तमान प्राथमिकता में अन्य एशियाई हितधारियों के साथ "पैन एशियन ट्रामा केयर तंत्र" का निर्माण करना है। आप संपूर्ण देश में उद्योगों, पत्तनों एवं खदानों में बेहतर औद्योगिक ईएमएस व्यवस्था करने के लिए कार्यरत हैं।

6. आप राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से सम्मानित किये जा चुके हैं एवं भारत के फिल्म प्रभाग द्वारा वर्ष 2012 में आपके कार्यों पर एक डाक्यूमेंटरी भी बनाई जा चुकी है। वर्ष 2003 में आपको एवं आपकी पत्नी को "रेड एंड वाईट ब्रेवरी गोल्ड अवार्ड फॉर सोशल एक्टस ऑफ करेज़" से सम्मानित किया जा चुका है। सामाजिक उद्यमी के रूप में वर्ष 2004 में आपको अशोका फैलो के लिए चुना गया। वर्ष 2004 में, आपको यू. के. का प्रिंस माइकल इंटरनेशनल रोड सेफ्टी अवार्ड प्राप्त हुआ है तथा वर्ष 2008 में आपको सीएनएन 10 एंड रिलाइन्स इंडस्ट्रीज पुरस्कार प्राप्त हुआ और एमरजेंसी फिजिशियन्स ऑफ इंडिया (ईपीआई) द्वारा "रोल मॉडल इन ईएमएस" से आपको नवाज़ा गया। वर्ष 2008 में दैनिक भास्कर समूह ने गुजरात के 100 सबसे अधिक शक्तिशाली व्यक्तियों में आपको रखा। वर्ष 2006 में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा आपके संगठन "लाइफ फाउंडेशन" को चौथे नेशनल रोड सेफ्टी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2005 में लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड ने आपके प्रयासों को मान्यता दी।